

इटली

साइकिल में गुप्त दस्तावेज़ ले जाने वाला खिलाड़ी

टूर डी फ्रांस चैंपियन ने अभ्यास के बहाने नाज़ी नाकों को पार किया। उनकी साइकिल के फ्रेम में छिपे नकली कागज़ात ने सैकड़ों ज़िंदगियाँ बचाईं।

कहाँ फ्लोरेंस से असीसी

कौन जीनो बारताली, एक चैंपियन साइकिल चालक जिन्होंने अपनी अभ्यास यात्राओं से सैकड़ों लोगों की जान बचाई

कब 1943 से 1944

4 मिनट में पढ़ें

कहानी

1930 के दशक के आख़िर में जीनो बारताली यूरोप के सबसे मशहूर खिलाड़ियों में से एक थे। वे फ्लोरेंस के पास एक गरीब परिवार में पले-बढ़े। बचपन में उन्होंने साइकिल की एक छोटी दुकान में काम किया। जब उन्होंने दौड़ में हिस्सा लेना शुरू किया, तो खड़ी पहाड़ी सड़कों पर उन्हें कोई नहीं रोक पाता था।

1938 में उन्होंने टूर डी फ्रांस जीता। यह प्रतियोगिता दुनिया की सबसे कठिन साइकिल दौड़ थी। वे एक राष्ट्रीय नायक बनकर इटली लौटे। देश के नेता चाहते थे कि वे फासीवादी हुक्मरानों की तारीफ करें। बारताली ने साफ़ मना कर दिया। वे एक सच्चे कैथोलिक थे। उनका मानना था कि ईश्वर की नज़र में सभी इंसान बराबर हैं।

फिर दूसरा विश्व युद्ध पूरे यूरोप में फैल गया।

एक ख़तरनाक गुज़ारिश

सितंबर 1943 में नाज़ी सेना ने उत्तरी और मध्य इटली पर कब्ज़ा कर लिया। सड़कों पर हथियारबंद सैनिक घूमने लगे। यहूदी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को ढूँढ-ढूँढकर पकड़ा जाने लगा। उन्हें गिरफ़्तारी और यातना शिविरों में मौत का सामना करना पड़ रहा था।

फ्लोरेंस में लोगों को बचाने के लिए एक गुप्त समूह बना। इस समूह का नेतृत्व स्थानीय आर्कबिशप और एक स्थानीय रब्बी कर रहे थे। उन्होंने यहूदी परिवारों को सुरक्षित घरों, खेतों और शांत चर्चों में छिपा दिया।

छिपे हुए परिवारों को ज़िंदा रहने के लिए नई पहचान की ज़रूरत थी। असीसी शहर के गुप्त छापेखाने वालों ने नकली पहचान पत्र बनाने की हामी भरी। उन्होंने यात्रा के जाली परमिट भी बनाए।

असीसी शहर फ्लोरेंस से पथरीली पहाड़ियों के पार एक सौ सत्तर किलोमीटर से भी ज़्यादा दूर था। सड़कों पर सैन्य चौकियाँ लगी थीं। अगर सैनिक किसी को जाली दस्तावेज़ ले जाते पकड़ लेते, तो उसे वहीं गोली मार देते थे।

इस बचाव दल को एक ऐसे संदेशवाहक की ज़रूरत थी जो बिना शक पैदा किए तेज़ी से सफर कर सके।

आर्कबिशप ने जीनो बारताली को अपने दफ़्तर बुलाया और उनसे मदद माँगी।

बारताली ख़तरे को अच्छी तरह जानते थे। उनकी एक नौजवान पत्नी और एक छोटा बेटा था। पकड़े जाने का मतलब सीधी मौत थी। फिर भी वे ज़रा भी नहीं झिझके। वे तुरंत तैयार हो गए।

साइकिल के खोखले पाइप

बारताली ने एक शानदार योजना बनाई।

वे आने वाली साइकिल दौड़ों के नाम पर हर रोज़ अभ्यास करते रहे। वे अपनी आधिकारिक रेसिंग जर्सी पहनकर देहात की ओर निकल पड़ते थे। उनकी छाती पर बड़े अक्षरों में उनका नाम लिखा होता था।

हर यात्रा से पहले वे फ्लोरेंस में अपने गुप्त साथियों से मिलते थे। वे साथी उन्हें पासपोर्ट तस्वीरें और जाली दस्तावेज़ पतली नलियों की तरह कसकर लपेटकर देते थे।

बारताली अपनी रेसिंग साइकिल की सीट का पेंच खोलते थे। वे उन कागज़ात को साइकिल के खोखले पाइप में नीचे खिसका देते थे। कुछ दस्तावेज़ वे हैंडल के अंदर भी छिपा लेते थे।

फिर वे अकेले ही सड़क पर निकल पड़ते थे।

फ्लोरेंस से असीसी जाकर वापस आने का रास्ता बहुत थका देने वाला था। यह तीन सौ पचास किलोमीटर से भी लंबा सफर था। यह रास्ता खड़ी पहाड़ी घाटियों और धूल भरी कच्ची सड़कों से होकर गुज़रता था।

बारताली तेज़ बारिश और बर्फीली हवाओं के बीच पैडल मारते रहे। जब नाकों पर जर्मन पहरेदार उन्हें रुकने को कहते, तो वे बिल्कुल शांत रहते थे।

सैनिक इस महान चैंपियन को तुरंत पहचान लेते थे। वे उनके चारों तरफ़ जमा हो जाते और उनसे ऑटोग्राफ़ माँगते थे।

जब भी कोई पहरेदार उनकी रेसिंग साइकिल को छूने आगे बढ़ता, बारताली तुरंत टोक देते थे।

वे पहरेदारों को चेतावनी देते कि साइकिल को बिल्कुल न छुएँ। वे कहते कि तेज़ रफ़्तार के लिए साइकिल के हर पुर्ज़े को मिलीमीटर के हिसाब से बैठाया गया है। वे दावा करते कि ज़रा सा छूने से भी उनका संतुलन बिगड़ जाएगा।

सैनिक उनकी बात मान लेते थे। वे पीछे हट जाते थे। वे उनके पास पर मुहर लगाते और उन्हें आगे जाने देते थे।

> “भलाई वह है जो आप करते हैं, वह नहीं जिसके बारे में आप बात करते हैं। कुछ पदक आपकी आत्मा पर लगते हैं, आपकी जैकेट पर नहीं।”
>
> जीनो बारताली, अपने बेटे आंद्रेया से बात करते हुए

बारताली थके हुए और धूल से सने असीसी पहुँचे। वे चर्च के पास रुके। नन और पादरियों ने उनका अंदर स्वागत किया।

उन्होंने साइकिल के फ्रेम से मुड़े हुए कागज़ात बाहर निकाले। कार्यकर्ताओं ने नए पहचान पत्रों पर तस्वीरें चिपकाईं और मुहर लगाई।

फिर बारताली ने तैयार जाली पहचान पत्र वापस अपनी साइकिल में भरे। वे मुड़े और वापस फ्लोरेंस की ओर पैडल मारने लगे।

उन्होंने कई महीनों में दर्जनों बार यह ख़तरनाक सफर तय किया।

उन्होंने फ्लोरेंस में अपने घर के तहखाने में भी एक यहूदी परिवार को छिपाया। शहर आज़ाद होने तक गोल्डेनबर्ग परिवार वहाँ सुरक्षित रहा।

1938	350km	800+
जिस वर्ष पहला टूर जीता	उनके आने-जाने की दूरी	समूह द्वारा बचाई गई जानें

ख़ामोश नायक

इस गुप्त समूह ने आठ सौ से ज़्यादा यहूदी लोगों को मौत के शिविरों से बचाने में मदद की।

युद्ध ख़त्म होने के बाद बारताली फिर से पेशेवर साइकिल दौड़ में लौट आए। 1948 में अपनी पहली जीत के दस साल बाद उन्होंने दूसरी बार टूर डी फ्रांस जीता।

फिर भी पूरी ज़िंदगी उन्होंने कभी इस बात की शेखी नहीं बघारी कि उन्होंने युद्ध में क्या किया था। उन्होंने कभी इन बचाव यात्राओं पर भाषण नहीं दिए। उन्होंने कभी पत्रकारों को नहीं बताया।

सालों बाद उनके बेटे आंद्रेया को इन गुप्त यात्राओं का पता चला। जब आंद्रेया ने इस बारे में पूछा, तो बारताली ने उन्हें चुप रहने को कहा। उन्होंने कहा कि असली नायक वे हैं जो मन में पीड़ा सहते हैं, वे नहीं जो तालियाँ बटोरते हैं।

साल 2000 में 85 वर्ष की उम्र में बारताली का निधन हो गया।

उनकी मृत्यु के बाद ही उनकी बहादुरी की पूरी सच्चाई दुनिया के सामने आई। 2013 में यद वाशेम स्मारक ने उन्हें दुनिया के नेक इंसानों में शामिल किया।

उनकी साइकिल उन्हें खेल के सबसे ऊँचे शिखरों तक ले गई। लेकिन उनकी सबसे महान दौड़ छिपकर इंसानी जान बचाने के लिए लगाई गई थी।

कब क्या हुआ

- **1938** एक युवा खिलाड़ी के रूप में बारताली ने पहला टूर डी फ्रांस जीता।
- **1943** नाज़ी सेना ने इटली पर कब्ज़ा किया, और बारताली बचाव समूह से जुड़े।
- **1944** उन्होंने सैकड़ों मील तक साइकिल में जाली कागज़ात पहुँचाए।
- **1948** बारताली ने पहली जीत के दस साल बाद दूसरी बार टूर डी फ्रांस जीता।
- **2013** यद वाशेम ने उन्हें दुनिया के नेक इंसानों के रूप में सम्मानित किया।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

ज़्यादातर मशहूर खिलाड़ी अपनी शोहरत का इस्तेमाल ऐशो-आराम और सुरक्षा के लिए करते हैं। जीनो बारताली ने अपनी शोहरत का इस्तेमाल अनजान लोगों के लिए जान जोखिम में डालने में किया। उन्होंने अपने अभ्यास फेरों को गुप्त बचाव अभियानों में बदल दिया और कभी अपनी बहादुरी की चर्चा नहीं की।

हमारी राय

सच्चा साहस तालियों का मोहताज नहीं होता। बारताली ने दिखाया कि असली इंसानियत वह है जो बिना तारीफ़ या इनाम की उम्मीद के दूसरों के लिए की जाए।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल दूसरों के लिए करें

बारताली किसी फ़ौज से नहीं लड़ सकते थे, लेकिन वे किसी से भी तेज़ और दूर तक साइकिल चला सकते थे।

यह आज़माएँ: अपने किसी हुनर को पहचानें और इस हफ़्ते अपने आस-पास किसी की मदद में उसका इस्तेमाल करें।

2 अपनी नेकी का ढिंढोरा न पीटें

उनका मानना था कि किसी की मदद करके शेखी बघारने से उस काम की पवित्रता खत्म हो जाती है।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते किसी सहकर्मी या पड़ोसी के लिए कोई अच्छा काम करें और किसी को न बताएं।

3 मुश्किल वक्त में उसूलों पर टिके रहें

उनके पास एक युवा परिवार था और खोने को बहुत कुछ था, लेकिन वे अन्याय देखकर चुप नहीं बैठे।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते अगर कार्यस्थल या पड़ोस में किसी के साथ अनुचित व्यवहार हो, तो शांति से उसके पक्ष में खड़े हों।

4 लगातार छोटे प्रयास करते रहें

उन्होंने सैकड़ों जानें एक ही दोपहर में नहीं बचाईं। उन्होंने बार-बार लंबी पहाड़ी यात्राएँ पूरी कीं।

यह आज़माएँ: किसी कठिन काम को छोटे रोज़ाना कदमों में बाँटें और इस हफ़्ते हर रोज़ उसका एक हिस्सा पूरा करें।

साथ ले जाने वाली एक बात

कुछ पदक आपकी आत्मा पर लगते हैं, आपकी जैकेट पर नहीं।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

BBC News
Gino Bartali: The cyclist who saved Jews in wartime Italy

United States Holocaust Memorial Museum
Gino Bartali

Holocaust Memorial Day Trust
Gino Bartali

तथ्य-जाँच नोट: बारताली ने जीवन भर अपने अभियानों को गुप्त रखा। बचाए गए लोगों की सही संख्या इतिहासकारों और जीवित बचे लोगों के अनुमान पर आधारित है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।